

रवीन्द्र कालिया की कहानियों में सामाजिक विडंबना

डॉ. पोरिका नागमणी

सहायक अद्यापिका (हिन्दी विभाग), शास्त्रीया स्नातक महाविद्यालय मुलुगु, मुलुगु जिला (506343) (T.S)

व्यक्ति समाज की इकाई है। व्यक्ति के अभाव में समाज की स्थापना या कल्पना करना अत्यन्त असम्भव कार्य है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यवहार व विचार होते हैं यही व्यवहार और विचार मानव को मानव से भिन्न करता है। व्यक्तियों के व्यवहार आदान-प्रदान से ही समाज निर्मित होता है अर्थात् समाज व्यक्तिगत समूह है। रवीन्द्र कालिया वस्तुतः अकहानी आन्दोलन से जुड़े एक सवक्त कहानीकार है। रवीन्द्र कालिया ने खुद को ऐसे समाज में पाया जहाँ का वातावरण मुख्यतः सामाजिक परिवर्तन , आर्थिक परिवर्तन, राजनीतिक एवं मानव के व्यवहार तक में बदलाव की सीमा पार कर चुकी है जिसे हम इन स्थितियों को सामाजिक विडंबना कहकर परिभाषित कर सकते हैं आजादी के बाद देश में आधुनिकीकरण के तहत शहरीकरण और यंत्रीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। बड़े शहरो के विकाष में उन्हें अपना कार्य चुनना पड़ा रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ महानगर की वास्तविकता से जुड़ी हैं। किस तरह व्यक्ति गाँव से शहर की ओर पलायन करते हैं और उन्हें किस-किस तरह की यहाँ समस्याओ का सामना करना पड़ता है यही सामाजिक विडंबना है।

बड़े शहर का आदमी कहानी का नायक पी.के. अपनी जेब में सुसाइट नोट लेकर घूमता है। क्योंकि वह महानगरीय जीवन की विडंबनाओं में बहुत ही बुरी तरह से फंस चुका है। वह शहर आता है यह सोचकर कि वह शहर में अपनी पहचान बनायेगा परन्तु वह अपनी पहचान ही भूल चुका है।

आधुनिक कहानियों में वस्तुतः महानगरीय , मध्यवर्ग, स्त्री-पुरुष के बदलते रिश्ते नारी का समाज में स्थान आर्थिक व राजनीतिक समस्याओ को ही केन्द्र बनाकर कहानियाँ लिखी गयी है। इन कहानीयो में राजेन्द्र यादव, मंजू भण्डारी, कमलेश्वर गंगा प्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह, जानरंजन, मोहन राकेश मदन वत्सायन अभिमन्यू अनंत आदि आते हैं।

रवीन्द्र कालिया की कहानी नौ साल छोटी पत्नी एक भावप्रधान कहानी है मे पती को यह पता चल जाता है कि उसकी पत्नी का विवाह के पहले किसी से प्रेम संबंध थे। यह जानते हुये भी पती पत्नी से

कुछ नहीं बोलता चुपचाप उसका यह राज अपने जहन में दबाये रहता है और कहीं न कहीं दुःख को आमन्त्रित करता है।

काला रजिस्टर कालिया जी की महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इस कहानी में दफ्तर में किस तरह भ्रष्टाचार फैल चुका है यह दर्शाया गया है। इसके सभी पात्र एक ही पीढ़ी के हैं परन्तु सत्ता के प्रतीक के खिलाफ संघर्ष में कोई भी किसी का साथ देने को नहीं तैयार है। यह सामाजिक विडंबना ही है जो समाज में रहते हुये भी मानव एक दूसरे के काम नहीं आता ।

'चैकेया नीम कहानी के अन्तर्गत कहानीकार ने राजनेताओं का असली रूप खोलने का प्रयास करने की पूर्ण कोषिष की है। इलेक्शन / चुनाव का जब समय आता है तब गाँव शहर , प्रत्येक क्षेत्र को इस तरह से सजाया जाता है जैसे कि नयी नवेली दुल्हन को उसके विवाह के उपरान्त सजाया जाता है लेकिन जैसे ही यह इलेक्शन का समय समाप्त होता है वैसे ही गाँव अपनी पूर्णतः गन्दगी को लिये फिर अपनी पुरानी समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। रवीन्द्र जी ने राजनीतिक समस्याओं की विडंबनाओं पर बहुत गहरी चोट करते दिखायी देते हैं। बेरोजगारी को उन्होंने चाल कहानी के अन्तर्गत दिखाने का प्रयास किया है। प्रकाश और किरण एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित हैं। प्रकाश ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर लिया है इसके बावजूद भी वह बेरोजगारी की मार झेल रहा है। यह समाज की सबसे बड़ी विडंबना बनी हुयी है। आज का युवा पीढ़ी इसकी मार को बाखूबी झेल व सह रहा है।

नौ साल छोटी पत्नी एक भावप्रधान कहानी है। यह कहानी अनमोल विवाह की ओर इंगित करती है। इस कहानी का नायक कुशल नामक एक युवक है जिसका विवाह तृप्ता नाम की एक लड़की से हो जाता है जो कुशल से नौ साल छोटी है। कुशल तृप्ता के आधिक के बारे में जानता है परन्तु उसे यह एहसास नहीं होने देता है और यह राज अपने अन्दर ही सीमित रखता है तृप्ता रोज अपने प्रेमी का पत्र पढ़ती है पूछने पर बोल देती है कि कुछ लिख रही हूँ। कालिया जी ने अपनी इस कहानी में दोनों के अन्तर मनः की स्थिति को आकने की पूरी कोषिष की है रवीन्द्र कालिया की कहानिया वर्तमान में चिंतित समाज की आइना जैसी लगती है। उनकी प्रत्येक कहानियों में वर्तमान की परिदृश्य को देख सकते हैं नौ साल छोटी पत्नी में लेखक ने पति और पत्नी दोनों की समस्याओं को समझने का भरसक प्रयास किया है जब कोई लेखक कहानी लिखता है तभी यह समझ लेता है कि उसका निस्कर्ष क्या होगा।

कहानी समकालीन साहित्य की सर्वाधिक प्रयोगशील और विश्वसनीय विद्या है। संभवतः साहित्य की सबसे प्राचीन व नैसर्गिक विद्या भी है। प्रत्येक युग की परिस्थितियों के अनुकूल कथा रूपों का निर्माण और बर्ताव कहानी के रूप में सामने आता है। मनुष्य के आवेग, भाव, विचारों और स्थापनाओं को प्रकट करने में सहायक होती है कहानी कालिया जी ने भी अपनी आवेग, भाव व विचार शैली को कहानियों के द्वारा ही स्पष्ट करने करने का सफल प्रयास किया है। उनकी प्रत्येक कहानियों में उन्हीं के द्वारा सही गयी समस्याओं को उद्घाटित किया है। कहानी साहित्य जगत में कहानी सर्वाधिक बरती जाने वाली विद्या है। कथा कहने की अन्य विधाओं के बजाय कहानी से पाठक और अन्य विधाओं के बजाय कहानी से लेखक और दोनों की अधिक आत्मीयता है। आधुनिक कहानी के पाठक अपने मानस पटल में इस विधा को बाखूबी से विषयासजगत में ले जाते हैं आज आधुनिकता को केवल देश-विदेश की भौगोलिक परिसीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता है।

हिन्दी कहानी की वर्तमान विविधता भी इसका सबल प्रमाण है सब लेखकों के अपने अनुभव क्षेत्र है और उन्हीं की प्रामाणिक अभिव्यक्ति उन लेखकों ने की है। मानसिक दिवास्वप्नों में डूब जाने की जगह क्या यह ज्यादा सही और उपयुक्त है। मनुष्य अपने आज की भयावहता, त्रास और संघर्ष को झेले नई कहानी शुरू से ही प्रगतिचेतना लेखकों और प्रगतिशील मूल्यों की सपिलष्ट इकाई मनुष्य की वाणी रही है। रवीन्द्र जी की कहानियों इन सभी विशेषताओं को पूरा करती है।

रवीन्द्र कालिया की प्रारंभिक कहानियों में आई प्रयोगशीलता को साफ तौर पर रेखांकित किया गया है। सत्ताईस साल की उम्र तक कहानी क, ख, ग कोजी कार्नर में अ कहानी का स्वर सुनायी देता है। इस पीढ़ी के युवाओं में इन सारे मूल्यों सिद्धान्तों के खिलाफ न केवल प्रतिकार का भाव बल्कि एक गहरा असंतोष भी दिखाई देता है यह इन समस्याओं से बाहर निकलना चाहते हैं परन्तु निकलने में उतनी ही कठिनाइयों का सामना भी करते हैं। ऐसे में बेरोजगारी, निराशा और गहरे असंतोष के लाये में जी रहे इन युवाओं के मन में क्षुब्ध युवा मन की आवाज को बाखूबी सुना जा सकता है। रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ वस्तुतः बहुपाक्षिक यथार्थ षिल्प की गुत्थी में फँसी हुई है। जो गम्भीर बातों को भी हल्के तरीके से व्यक्त करने में सफल होते दिखाई देते हैं। यही इनकी प्रमुख विशेषता है। इनकी कहानियों में नायक नायिकाओं में प्रतिनायक सभी एक झंझावती जीवन संघर्ष से जूझ रहे हैं लगातार और अहर्निश एक तरह की परिस्थितियों में पड़े रहने की अभिव्यक्ति है।

निम्न मध्यवर्गीय जीवन को कालिया जी ने व्यापक फलक पर अंकित करने का सफल प्रयास सराहनीय है। ऊर्जा बोध के बावजूद सफेद पोषी की विवशता, पारिवारिक ढाँचे की चरमराहट कैसे भी परिवर्तन की अपेक्षा यथास्थिति और सुरक्षा की चाह बड़े शहरों में जगह की तनाव और पीढ़ियों की सोच का अंतराल इनकी कहानियों का मुख्य विषय रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मधुरेश हिन्दी कहानी का विकास, 2018, पृष्ठ संख्या 30
2. हिन्दी कहानियाँ एक आलोचनात्मक अध्ययन, डॉ श्री कृष्णलाल (पृष्ठ-33)
3. प्रतिनिधि कहानियाँ, रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1984 (पृष्ठ -80)
4. सिंह नामवर कहानी नयी कहानी. लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद सं. -2012 (पृष्ठ-110)
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम वर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002 (पृष्ठ - 109)
6. कमलेश्वर, नयी कहानी की भूमिका, 2015 राजकमल प्रकाशन (पृष्ठ सं. 80-87) -
7. हिन्दी कहानी पहचान और परख, (पृष्ठ - 27)
8. समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि, धनंजय, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद 1970(पृष्ठ 100-110)